प्रातःक्लास ओमशांति 22–8–67

ओमशांति। रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप समझाय रहे हैं। अभी समझते हो कि हम सब रुहानी बेहद के बाप के बच्चे हैं। उनको (बाप)दादा कहा जाता है। जैसे तुम रुहानी बच्चे हो वैसे यह बह्मा भी रुहानी बच्चा है शिवबाबा का। शिवबाबा को रथ तो चाहिए ना। इसलिए जैसे तुम आत्माओं को यह रथ आरगन्स मिली हुई है कर्म करने लिए वैसे शिवबाबा का भी यह रथ है ;क्योंकि यह कर्मक्षेत्र है। (यहां) कर्म करना होता है। वह है ....जहां आत्माएं रहती हैं। आत्मा ने जाना है हमारा घर है शांतिधाम। वहां यह खेल नहीं होता। बत्तियां आदि कुछ नहीं होती। सिर्फ आत्माएं रहती हैं। यहां आती हैं पार्ट बजाने। तुम्हारी बुद्धि में है यह बेहद का ड्रामा है। जो भी एक्टर्स हैं उन्हों की एक्ट शुरू से लेकर अंत तक तुम बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थअनुसार जानते हो। तुम जानते हो यहां कोई साधु–संत आदि नहीं समझाते हैं। यहां हम बच्चे बेहद के बाप पास बैठे हैं। इस जिस्म को भूलते जा रहे हैं। अब हमको वापस जाना है। पवित्र भी जरूर बनना है आत्मा को। ऐसे नहीं कि शरीर भी यहां पवित्र बनना है। नहीं, आत्मा ही पवित्र बनती है। शरीर पवित्र तब बने जब 5तत्व भी सतोप्रधान हो। अब तुम्हारी आत्मा पुरुषार्थ कर पावन बन रही है। वहां आत्मा और शरीर दोनों पवित्र होते हैं। यहां नहीं हो सकता। आत्मा अपवित्र बन जाती है तो पुरानी शरीर छोड़ देती है। फिर नये तत्वों से नई शरीर बनती है। तुम जानते हो हमारी आत्मा बेहद के बाप को याद करती है। याद करते हैं या नहीं करते हैं यह तो हरेकर को अपने से पूछना है। अभी टाइम बहुत है। ऐसे नहीं कि पढ़ाई पूरी हुई। नहीं। पढ़ाई का सारा मदार है योग पर। पढ़ाई तो सहज है। समझ गये कि सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। मुख्य है ही याद की यात्रा। यह है अंदर गुप्त। देखने में थोड़े ही कुछ आता है। बाबा नहीं कह सकेंगे कि यह बहुत याद करते हैं वा कम। हां, ज्ञान के लिए बताय सकते हैं कि यह ज्ञान में बहुत तीखा है। याद की कुछ देखने में नहीं आता है। ज्ञान मुख से बोला जाता है। याद तो है अजपाजाप। जाप अक्षर भक्तिमार्ग का है। जाप माना कोई का नाम .....। यहां तो आत्मा को अपने बाप को याद करना है। तुम जानते हो हम बाप को याद करते2 पवित्र बनते2 मुक्तिधाम जाय पहुंचेंगे। ऐसे नही कि ड्रामा से मुक्त हो जावेंगे। मुक्ति का अर्थ है दुःख से मुक्त हो शांतिधाम जाय फिर सुखधाम में आवेंगे। पवित्र जो बनते हैं वह सुख भोगते हैं। अपवित्र मनुष्य उन्हों की खिजमत करते हैं। पवित्र की महिमा है। इसमें ही मेहनत है। आंखें बड़ा धोखा देती हैं। बाबा जानते हैं बहुत धोखा खाते हैं। ब्राह्मणियां भी धोखा खाय लेती हैं,गिर पड़ती हैं। नीचे–उपर तो सबको होना है। ग्रहाचारी सबकी लगती है। वास्तव में प्रैक्टिस सबको करना चाहिए। समझाने की ऐसी प्रैक्टिस करते नहीं हैं। समझते है। ...ब्राह्मणी को ही समझाना है। बाबा कहते हैं बच्चे भी समझाय सकते हैं। फिर भी कहते माता गुरू चाहिए ;क्योंकि अब माता गुरू का सिलसिला चलता है। आगे पिताओं का था। अभी पहले2 कलश माताओं को मिलती है। माताएं मैजॉरिटी में हैं। कुमारियां राखी बांधती हैं पवित्रता के लिए। भगवान कहते हैं काम महाशत्रु है। इन पर जीत पहनो। राखी पवित्रता की निशानी है। वह लोग राखी बांधते हैं पवित्र तो बनते नहीं हैं। वह सब हैं आर्टीफिशियल । राखी कोई पावन बनाने वाली नहीं है। इसमें तो ज्ञान चाहिए। अभी तुम राखी बांधते हो। अर्थस समझते हो यह प्रतिज्ञा कराते हैं। जैसे सिक्ख लोग को कंगण निशानी होती है। वास्तव में इसका भी अर्थ है। पवित्र बनने का कंगण ;परंतु वह कोई पवित्र रहते नहीं हैं। पतित को पावन बनाने वाला एक ही बाप है। गुरू लोग कोई शास्त्रों द्वारा पावन नहीं बनाय सकते। सर्व की सदगति दाता शास्त्र वा पानी की गंगा नहीं है। सर्व का सदगति दाता एक ही है। सो भी देहधारी नहीं। पानी की गंगा तो इन आंखों से देखने में आती है। बाप जो सदगतिदाता है उनको इन आंखों से नहीं देखा जाता। आत्मा को कोई भी देख नहीं सकते। वह तो अंदर बैठी है। आत्मा निकल जाती है। बुद्धि से समझते हो इन आंखों से नहीं देख सकते। वह सूक्ष्म चीज है। शरीर तो देखने में आता है। आकाश आदि यह सब देखने में (मुरली अधूरी है)